हक़ीक़ते दीन

क़िस्त –4

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

''एक देवबन्दी प्रोफ़ेसर का मौला अली (अ०) के बारे में अकीदा''

डॉ० गुलाम मुरतज़ा मलिक देवबन्दी हैं मगर स्कालर (Scholar) हैं, पढ़े लिखे इन्सान हैं। मसायल (problem)को समझते हैं। तेरह रजब के 'जश्ने मौलूदे काबा' मे उनकी तक़रीर रेकार्ड (Record) है। कितनी आलिमाना तक़रीर थी। एक सुन्नी स्कॉलर कह रहा है, बीस साल तक सऊदी अरब की युनिवर्सिटी (University)में प्रोफ़ेसर रहा है। उसको अरबी ज़बान पर कमाण्ड है। उर्दू की किताबों से उसने इसलाम को नहीं समझा है। ORIGINAL SOURCE से उसने इस्लाम को समझा है। वो कह रहा है तेरह रजब की अपनी तकरीर में। एक स्कालर ये कह रहा है कि ''अहले सुन्नत के तमाम मस्लकों (Sects) का इत्तेफाक है, चाहे वो हनफी हों, शाफयी हों, मालिकी हों, देवबन्दी हों, अहले हदीस हों, किसी भी मसलक के हों, कि कोई भी दौर हो, कोई भी ज़माना हो, कोई भी शख्सियत हो, जब भी कोई अली (अ०) के मुकाबले पर आया तो हक़ हमेशा अली (अ०) के साथ था। अब हमारा और उनके बीच फ़र्क़ ही क्या रह गया?

''मजलिसों के वक़ार को बरक़रार रखिये''

हुकूमत कोई बुरी चीज़ नहीं है। पाक और पाकीज़ा सियासत कोई बुरी चीज़ नहीं है। मगर इतनी बड़ी जंगें (Wars) क्यों हुई? हुकूमतों की खता नहीं थी। सियासत की खता नहीं थी। बीच में मण्ड़ी आ गयी। जहां बीच में मण्ड़ी (Market) आ जाती है, वहीं झगड़े होते हैं तो मजलिसों को भी मण्ड़ी होने से बचाइए।

बोलियां न लगे यहां। मेरे एक दोस्त लखनऊ में हैं जो दूसरे फ़िरक़े में हैं। मगर ज़रा कड़वे हैं उनसे किसी ने कहा कि ज़रा ज़बान पर कन्ट्रोल रख कर बात किया कीजिये। ऐसी बातचीत क्यों करते हैं जिससे मुसलमानों के इत्तेहाद (Unity) को नुकसान पहुंचता है। उन्होंने साफ कहा कि मुसलमानों के इत्तेहाद को देखें या अपने मुरग़े देखें। तो जहां मण्डी आ जाती है, बीच में पैसा आजाता है वहां जंग होती है। ना कीजिये ऐसा! इन मजलिसों के तक़द्दुस और विकार को बरकरार रखिये। ये मजलिसें जनाबे सय्यदा (स०) की अमानत हैं। ये मजलिसें शहज़ादी ज़ैनब (अ०) और इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ०) की अमानत हैं।

'क़ुरआने मजीद इन्सानों की हिदायत के लिए आया है''

अल्लाह ने हर नबी को कोई न कोई मोजिजा देकर दुनिया में भेजा। आग हर इन्सान को कुछ सेकेन्डों (Seconds) में जलाकर राख कर देती है लेकिन हजरत इब्राहीम (अ०) को आग में डाला गया तो क्या हुआ? बहुत ग़लतियां हम लोग करते है। आम तौर पर कहा जाता है कि हज़रत इब्राहीम (अ०) के लिये आग ठंडी हो गयी थी लेकिन मैं कहता हूं कि आग ठंडी नहीं हुयी थी बिल्कुल ठंडी नहीं हुई। इसकी दलील भी है मेरे पास कि आग ठंडी नहीं हुयी थी। दलील यह है कि जिन रस्सियों (Ropes) में जकड़ कर इब्राहीम (अ०) को आग में फेंका गया

था, अगर उस आग ने उस रस्सी को जलाया न होता तो इब्राहीम (अ०) निकलते ही कैसे? लेकिन थोड़ी देर के बाद इब्राहीम (अ०) का आग में से टहलते हुये निकल आना इस बात की दलील है कि आग खूब पहचानती थी कि रस्सी नबी के जिस्म से लिपटी हुयी है मगर कहाँ तक जलाना है और कहां तक नहीं जलाना है। इब्राहीम (अ०) की खाल (Skin) पर एक दाग़ (Burn) भी नहीं पड़ा और रस्सी का एक रेज़ा (part) भी न बच सका।

इसी तरह हज़रत मूसा (अ०) का मोजिज़ा था एक असा, एक डन्डा (Stick) ये डन्डा कभी सांप बन गया कभी अज़दहा। यही लकड़ी अगर पहाड़ की चट्टान पर पड़ी तो पत्थर से लकड़ी टूटती है, लकड़ी से पत्थर नहीं टूटता लेकिन क़ुरआने मजीद कहता है कि एक चोट ने बारह चश्में (Fountains) बना दिये। तो हर नबी को कोई न कोई मोजिज़ा देकर भेजा गया। हमारे रसूल (स०) को क़ुरआने मजीद मोजिज़े की शक्ल में दिया गया। दूसरे नबियों के मोजिज़ों में और क़ुरआने मजीद में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। जनाबे मूसा (अ०) का असा (Stick) बेशक मोजिज़ा था, लेकिन अगर मूसा (अ०) का असा यहां पर आ जाये और मैं उससे कहूं कि ज़िन्दगी के मसायल (Problem) में मेरी रहनुमाई कर दे तो कहीं डन्डा (Stick) कुछ रहनुमाई (Guidence) कर सकता है? डन्डा तो पहाड़ की चट्टान को तोड़ सकता है लेकिन इन्सान के मसायल (Problem) नहीं हल (Solve) कर सकता है। इन्सानों की हिदायत (Guidence) नहीं कर सकता है। ये काम वह नहीं कर सकता है। ये सिफत (Quality) सिर्फ क़ुरआने मजीद की है कि वो एक ही वक्त में मोजिज़ा भी है और तमाम दुनिया के इन्सानों के लिए हिदायत का सरमाया भी है। इन्सानों के सामने क़यामत तक जितने भी मसायल (Problem) आ सकते हैं, उन सारे मसायल का हल क़ुरआन मजीद में मौजूद है।

''मुल्ला और आलिम में क्या फ़र्क़ है?''

मैं मुआफ़ी चाहता हूं, मगर अल्लाह और अल्लाह के बन्दों के बीच सबसे बड़ी झाड़ी का नाम है 'मुल्ला' सबसे बड़े कांटे का नाम है 'मुल्ला'। मैं उलमा की बात नहीं कर रहा हूं। उलमा उलमा हैं। किसी भी फिरके (Sect) के हों। आलिम किसी भी फिरक़े का हो उसका हमेशा मुसबत रूख (Positive Approch) होता है। आलिम और मुल्ला में क्या फर्क होता है? आलिम का रूख मुसबत होता है और मुल्ला किसी भी फिरके का हो उसका रूख मनफ़ी (Negative Approch) होता है।

आलिम मिलाना चाहता है, मुल्ला लड़ाना चाहता है। तारीख हमेशा अपने को दोहराती है। आज यूरोप में ईसाईयत का खात्मा क्यों हो गया? ईसाईयत को हिन्दुओं और मुसलमानों ने खत्म नहीं किया। ईसाइयत को खत्म करने में सबसे बड़ा हाथ खुद वहीं के तंग नज़र (Narrow Minded) फिरकापरस्त, जुमूद पसन्द (Inactive) पादरियों का था। उन्होंने क्या किया? दो काम किये। पहला काम यह किया कि एक फिरके को दूसरे फिरके से लड़ाया। तारीख (History)को पढ़िये! प्रोटेस्टेन्ट (Protestent) और कैथोलिक्स में जो झड़पें हुयी हैं, उस में एक–एक झड़प में हज़ारों आदमी मारे गये हैं। दोनों फिरकों ने एक दूसरे के लिए कहा कि हम इनको ज़िन्दा नहीं रहने देंगे। नतीजा क्या हुआ कि न यह ज़िन्दा रहे और न वह ज़िन्दा रहे। ईसाइयत खत्म हो गयी। आने वाली नस्लें (Generations) बददिल हो गई कि मज़हब तो जान लेना सिखाता है। मज़हब में बर्दाश्त की ताकत नहीं है। ये इख़्तेलाफे राय को सहने के लिए तैयार नहीं हैं। किसी ने इख़्तेलाफे राय किया, इन्होंने (मज़हब के ठेकेदारों) कहा मारो।